५.अनोखे राष्ट्रपति

– *महादेवी वर्मा*

राजेंद्र बाबू को मैंने पहले-पहले एक सर्वथा गद्यात्मक वातावरण में ही देखा था परंतु उस गद्य ने कितने भावात्मक क्षणों की अटूट माला गूँथी है, यह बताना कठिन है ।

मैं प्रयाग में बी.ए. की विद्यार्थी थी और शीतावकाश में घर भागलपुर जा रही थी । पटना में भाई के मिलने की बात थी, अतः स्टेशन पर ही प्रतीक्षा के कुछ घंटे व्यतीत करने पड़े ।

स्टेशन के एक ओर तीन पैरोंवाली बेंच पर देहातियों की वेशभूषा में कुछ नागरिकों से घिरे सज्जन जो विराजमान थे, उनकी ओर मेरी विहंगम दृष्टि जाकर लौट आई । वास्तव में भाई से यह जानने के उपरांत कि उक्त सज्जन ही राजेंद्र बाबू हैं, मुझे अभिवादन का ध्यान आया ।

पहली दृष्टि में ही जो आकृति स्मृति में अंकित हो गई थी, उसमें इतने वर्षों ने न कोई नई रेखा जोड़ी है और न कोई नया रंग भरा है ।

सत्य में से जैसे कुछ घटाना या जोड़ना संभव नहीं रहता वैसे ही सच्चे व्यक्तित्व में भी कुछ जोड़ना-घटाना संभव नहीं है ।

काले घने पर छोटे कटे हुए बाल, चौड़ा मुख, चौड़ा माथा, घनी भृकुटियों के नीचे बड़ी आँखें, मुख के अनुपात में कुछ भारी नाक, कुछ गोलाई लिए चौड़ी ठुड्डी, कुछ मोटे पर सुडौल ओंठ, श्यामल झाँई देता हुआ गेहुआँ वर्ण, बड़ी-बड़ी ग्रामीणों जैसी मूँछें जो ऊपर के ओंठ को ही नहीं ढँक लेती थीं, नीचे के ओंठ पर भी रोमिल आवरण डाले हुए थीं । हाथ, पैर, शरीर सबमें लंबाई की ऐसी विशेषता थी जो दृष्टि को अनायास आकर्षित कर लेती थी ।

उनकी वेशभूषा की ग्रामीणता तो और भी दृष्टि को उलझा लेती थी । खादी की मोटी धोती ऐसा फेंटा देकर बाँधी गई थी कि एक ओर दाहिने पैर पर घुटना छूती थी और दूसरी ओर बाएँ पैर की पिंडली । मोटे, खुरदुरे, काले बंद गले के कोट में ऊपर का भाग, बटन टूट जाने के कारण खुला था और घुटने के नीचे का बटनों से बंद था । सर्दी के दिनों के कारण पैरों में मोजे जूते तो थे, परंतु कोट और धोती के समान उनमें भी विचित्र स्वच्छंदतावाद था । मिट्टी की परत से न जूतों के रंग का पता चलता था, न रूप का । गांधी टोपी की स्थिति तो और भी विचित्र थी । उसकी आगे की नोक बाईं भौंह पर खिसक आई थी और टोपी की कोर माथे पर पट्टी की तरह लिपटी हुई थी । देखकर लगता था मानो वे किसी हड़बड़ी में

परिचय

जन्म : १९०७, फर्रुखाबाद (उ.प्र.)

मृत्यु : १९८७, इलाहाबाद (उ.प्र.)

परिचय : महादेवी वर्मा जी प्रतिभावान साहित्यकार थीं । आप छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक मानी जाती हैं । आपकी रचनाएँ समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित और प्रेरित करती हैं । आपको आधुनिक 'मीरा' और हिंदी के विशाल मंदिर की 'सरस्वती' कहा जाता है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'नीहार', 'रश्मि', 'सांध्यगीत' (कविता संग्रह), 'संकल्पिता', 'शृंखला की कड़ियाँ' (निबंध), 'पथ के साथी', 'मेरा परिवार' 'अतीत के चलचित्र' (रेखाचित्र) आदि ।

गद्य संबंधी

महादेवी वर्मा जी द्वारा लिखित प्रस्तुत संस्मरण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी के बारे में है । पाठ में डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी की सादगी, सरलता, सहज स्वभाव के बारे में प्रकाश डाला गया है । यहाँ लेखिका ने स्पष्ट किया है कि भारत के महामहिम पद पर पहुँचकर भी डॉ. राजेंद्र प्रसाद में अहं लेशमात्र भी नहीं था ।

NitinTonpe.com

चलते-चलते कपड़े पहनते आए हैं, अतः जो जहाँ जिस स्थिति में अटक गया, वह वहीं उसी स्थिति में लटका रह गया ।

उनकी मुखाकृति देखकर अनुभव होता था मानो इन्हें पहले कहीं देखा है । अनेक व्यक्तियों ने भी उन्हें प्रथम बार देखकर ऐसा ही अनुभव किया । बहुत सोचने के उपरांत ही उस प्रकार की अनुभूति का कारण समझ में आ सका ।

राजेंद्र बाबू की मुखाकृति ही नहीं, उनके शरीर के संपूर्ण गठन में एक सामान्य भारतीय जन की आकृति और गठन की छाया थी, अतः उन्हें देखने वाले को कोई न कोई आकृति या व्यक्ति स्मरण हो आता था और वह अनुभव करने लगता था कि इस प्रकार के व्यक्ति को पहले भी कहीं देखा है । आकृति तथा वेशभूषा के समान ही वे अपने स्वभाव और रहन-सहन में सामान्य भारतीय या भारतीय कृषक का ही प्रतिनिधित्व करते थे । प्रतिभा और बुद्धि की विशिष्टता के साथ-साथ उन्हें जो गंभीर संवेदना प्राप्त हुई थी, वही उनकी सामान्यता को गरिमा प्रदान करती थी । व्यापकता ही सामान्यता की शपथ है परंतु व्यापकता, संवेदना की गहराई में स्थिति बनाए रखती है ।

उनकी वेशभूषा की अस्त-व्यस्तता के साथ उनके निजी सचिव और सहचर भाई चक्रधर जी का स्मरण अनायास हो आता है । जब मोजों में से पाँचों उँगलियाँ बाहर निकलने लगतीं, जब जूते के तले पैर के तलवों के गवाक्ष बनने लगते, जब धोती, कुरते, कोट आदि का खद्दर अपने मूल ताने-बाने में बदलने लगता, तब चक्रधर इस पुरातन सज्जा को अपने लिए सहेज लेते । उन्होंने वर्षों तक इसी प्रकार राजेंद्र बाबू के पुराने परिधान से अपने आपको प्रसाधित कर कृतार्थता का अनुभव किया था । मैंने ऐसे गुरु-शिष्य या स्वामी-सेवक अब तक नहीं देखे ।

राजेंद्र बाबू के निकट संपर्क में आने का अवसर मुझे सन १९३७ में मिला जब वे काँग्रेस के अध्यक्ष के रूप में महिला विद्यापीठ महाविद्यालय के भवन का शिलान्यास करने प्रयाग आए। उनसे ज्ञात हुआ कि उनके संयुक्त परिवार में पंद्रह-सोलह पौत्रियाँ हैं जिनकी पढ़ाई की व्यवस्था नहीं हो पाई है । मैं यदि अपने छात्रावास में रखकर उन्हें विद्यापीठ की परीक्षाओं में बैठा सकूँ तो उन्हें कुछ विद्या प्राप्त हो सकेगी ।

पहले बड़ी फिर छोटी, फिर उनसे छोटी के क्रम से बालिकाएँ मेरे संरक्षण में आ गईं । उन्हें देखने प्रायः उनकी दादी और कभी-कभी दादा भी प्रयाग आते रहे । तभी राजेंद्र बाबू की सहधर्मिणी के निकट संपर्क में आने का अवसर मिला । वे सच्चे अर्थ में धरती की पुत्री थीं । वे साध्वी, सरल, क्षमामयी, सबके प्रति ममतालु और असंख्य संबंधों की सूत्रधारिणी थीं ।

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति का संदेश सुनिए ।

महाराष्ट्र के पर्यटन विभाग से पर्यटन संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली तैयार कीजिए ।

NitinTonpe.com

ससुराल में उन्होंने बालिकावधू के रूप में पदार्पण किया था । संभ्रांत जमींदार परिवार की परंपरा के अनुसार उन्हें घंटों सिर नीचा करके एकासन बैठना पड़ता था, परिणामतः उनकी रीढ़ की हड्डी इस प्रकार झुक गई कि युवती होकर भी वे सीधी खड़ी नहीं हो पाती थीं ।

बालिकाओं के संबंध में राजेंद्र बाबू का स्पष्ट निर्देश था कि वे सामान्य बालिकाओं के समान बहुत सादगी और संयम से रहें । वे खादी के कपड़े पहनती थीं, जिन्हें वे स्वयं ही धो लेती थीं । उनके साबुन-तेल आदि का व्यय भी सीमित था । कमरे की सफाई, झाड़-पोंछ, गुरुजनों की सेवा आदि भी उनके अध्ययन के आवश्यक अंग थे ।

उस समय स्वतंत्रता संघर्ष के सैनिकों का गंतव्य जेल ही रहता था, अतः प्रायः किसी की पत्नी, किसी की बहिन, किसी की बेटी विद्यापीठ के छात्रावास में आ उपस्थित होती थीं । देश स्वतंत्र होने के उपरांत उनमें से कुछ दिल्ली चली गईं और कुछ विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी विद्यालयों में भर्ती हो गईं । केवल राजेंद्र बाबू अपवाद रहे । उनके भारत के प्रथम राष्ट्रपति हो जाने के उपरांत मुझे स्वयं उनकी पौत्रियों के संबंध में चिंता हुई । उनका स्पष्ट उत्तर मिला, ''महादेवी बहन, दिल्ली मेरी नहीं है, राष्ट्रपति भवन मेरा नहीं है । अहंकार से मेरी पौत्रियों का दिमाग खराब न हो जाए, तुम केवल इसकी चिंता करो । वे जैसे रहती आई हैं, उसी प्रकार रहेंगी । कर्तव्य, विलास नहीं कर्मनिष्ठा है ।''

उनकी सहधर्मिणी में भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ । जब राष्ट्रपति भवन में उनके कमरे से संलग्न रसोईघर बन गया तब वे दिल्ली गईं और अंत तक स्वयं भोजन बनाकर सामान्य भारतीय गृहिणी के समान पति, परिवार तथा परिजनों को खिलाने के उपरांत स्वयं अन्न ग्रहण करती थीं ।

उस विशाल भवन में यदि अपने अद्भुत आतिथ्य की बात न कहूँ तो कथा अधूरी रह जाएगी । बालिकाओं की दादी ने मुझे दिल्ली आने का विशेष निमंत्रण तो दिया ही, साथ ही प्रयाग से सिरकी से बने एक दरजन सूप लाने का भी आदेश दिया । उन्होंने बार-बार आग्रह किया कि मैं उनके लिए इतना कष्ट अवश्य उठाऊँ क्योंकि फटकने-पछोरने के लिए सिरकी के सूप बहुत अच्छे होते हैं पर कोई उन्हें लाने वाला ही नहीं मिलता ।

प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बारह सूपों के टाँगने पर जो दृश्य उपस्थित हुआ उससे भी अधिक विचित्र दृश्य तब प्रत्यक्ष हुआ; जब राष्ट्रपति भवन से आई बड़ी कार पर यह उपहार लादा गया । राष्ट्रपति भवन के हर द्वार पर सलाम ठोंकने वाले सिपाहियों की आँखें विस्मय से खुली रह गईं । ऐसी भेंट लेकर कोई अतिथि न कभी वहाँ पहुँचा था, न पहुँचेगा पर भवन की तत्कालीन स्वामिनी ने मुझे अंक में भर लिया ।

संभाषणीय

'सामाजिक स्तर का आधार वेशभूषा है' इस बात से आप कितने सहमत हैं, आपस में चर्चा कीजिए ।

NitinTonpe.com

राजेंद्र बाबू तथा उनकी सहधर्मिणी सप्ताह में एक दिन अन्न नहीं ग्रहण करते थे । संयोग से मैं उनके उपवास के दिन ही पहुँची, अतः उनकी यह जिज्ञासा स्वाभाविक थी कि मैं कैसा भोजन पसंद करूँगी । उपवास में भी आतिथेय का साथ देना उचित समझकर मैंने निरन्न भोजन की ही इच्छा प्रकट की । फलाहार के साथ उत्तम खाद्य पदार्थों की कल्पना स्वाभाविक रहती है । सामान्यतः हमारा उपवास अन्य दिनों के भोजन की अपेक्षा अधिक व्ययसाध्य हो जाता है क्योंकि उस दिन हम भाँति-भाँति के फल, मेवे, मिष्ठान्न आदि एकत्र कर लेते हैं ।

मुझे आज भी वह संध्या नहीं भूलती जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति को मैंने सामान्य आसन पर बैठकर दिन भर के उपवास के उपरांत केवल कुछ उबले आलू खाकर पारायण करते देखा । मुझे भी वही खाते देखकर उनकी दृष्टि में संतोष और ओठों पर बालकों जैसी सरल हँसी छलक उठी ।

जीवन मूल्यों की परख करने वाली दृष्टि के कारण उन्हें देशरत्न की उपाधि मिली और मन की सरल स्वच्छता ने उन्हें अजातशत्रु बना दिया । अनेक बार प्रश्न उठता है, ''क्या वह साँचा टूट गया जिसमें ऐसे कठिन कोमल चरित्र ढलते थे ?''

('संस्मरण राजेंद्र बाबू' से)

— o —

पठनीय

भारतरत्न डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम लिखित किसी एक पुस्तक का अंश पढ़िए । उसमें निहित प्रमुख बातें अपने मित्रों को सुनाइए ।

शब्द संसार

भृकुटी स्त्री.सं.(सं.) = भौंह
ठुड्डी स्त्री.सं.(दे.) = ठोढ़ी
रोमिल वि.(सं.) = रोयेंदार
निर्देश पुं.सं.(सं.) = सूचना
सिरकी स्त्री.सं.(हिं.) = सरकंडे या सरई
पछोरना क्रि.(हिं.दे.) = अनाज सूप में रखकर फटककर साफ करना
निरन्न वि.(सं.) = निराहार, अन्नरहित
व्ययसाध्य वि.(सं.) = महँगा

मुहावरा

आँखें खुली रह जाना = आश्चर्य चकित होना
अंक में भरना = गले लगाना

NitinTonpe.com

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

(२) कृति में जानकारी लिखिए :

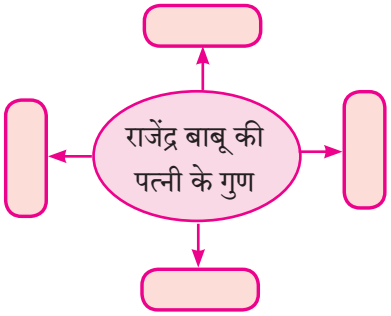

(३) उत्तर लिखिए :

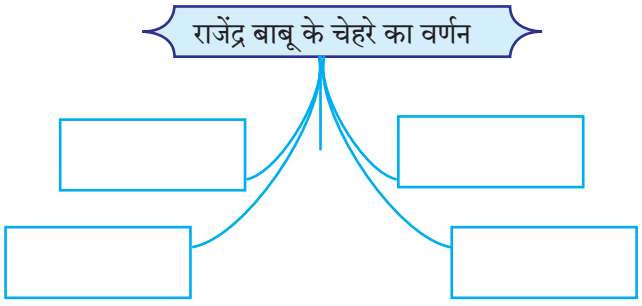

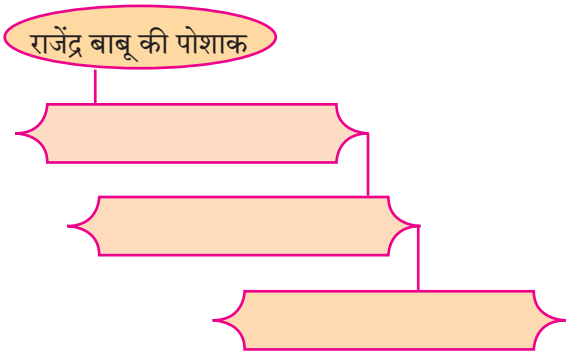

(४) निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय और मूलशब्द अलग करके लिखिए :

प्रत्यय साधित शब्द	प्रत्यय	मूलशब्द
बुद्धिमान पारिवारिक रोमिल ममतालु		

(५) उपसर्ग तथा प्रत्यययुक्त शब्द बनाकर लिखिए :

	उपसर्गयुक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यययुक्त शब्द
१.	-------	आवश्यक	-------
२.	-------	कर्म	-------
३.	-------	समय	-------

	उपसर्गयुक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यययुक्त शब्द
४.	-------	हृदय	-------
५.	-------	सफल	-------
६.	-------	चंचल	-------

अभिव्यक्ति ‘सादा जीवन, उच्च विचार’ विषय पर अपने विचार लिखिए ।

NitinTonpe.com

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	संधि विच्छेद	संधि शब्द	संधि भेद
१.	दु:+लभ	--------	--------
२.	महा+आत्मा	--------	--------
३.	अन्+आसक्त	--------	--------
४.	अंत:+चेतना	--------	--------
५.	सम्+तोष	--------	--------
६.	सदा+एव	--------	--------

(२) निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
१.	सज्जन	+	
२.	नमस्ते	+	
३.	स्वागत	+	
४.	दिग्दर्शक	+	
५.	यद्‌यपि	+	
६.	दुस्साहस	+	

(३) निम्नलिखित शब्दों का विच्छेद कीजिए और संधि भेद लिखिए :

दिग्गज
सप्ताह
निश्चल
भानूदय
निस्संदेह
सूर्यास्त

विच्छेद			भेद
________	+	________	( )
________	+	________	( )
________	+	________	( )
________	+	________	( )
________	+	________	( )
________	+	________	( )
________	+	________	( )
________	+	________	( )

(४) पाठों में आए संधि शब्द छाँटकर उनका विच्छेद कीजिए और संधि का भेद लिखिए ।

उपयोजित लेखन

'यदि मैं शिक्षा मंत्री होता ------' विषय पर लगभग सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

CHQTQ2

NitinTonpe.com